कृषि व्यावसायिकरण का कृषियौद्योगिक विकास पर प्रभावः शाहजंहापुर जनपद 'उत्तर प्रदेश' के विशेष संदर्भ में

1

डॉ0 नरेश कुमार*

विजय कुमार**

जैसा कि विदित है कि भारतीय अर्थव्यस्था कृषि प्रधान ही है। प्राचीन काल से यहां का जनमानस कृषि से अभिन्न रूप से जुड़ा है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व जहां भारतीय कृषि खाद्यान्नोमुख होने के साथ पनी दयनीय दशा में थी, वहीं 1970 के आते–आते कृषि क्षेत्र हरित क्रांति जैसे विकासोन्मुख क्रिया–कलाप सम्मिलित कर लिये गये। अगले दो दशकों में जहां देष में खाद्यान्नों में आत्म–निर्भरता आयी, वहीं कृषि का रूप भी धीरे–धीरे परिवति होने लगा । 1990 से 2000 के दशक में कृषि में खाद्याान्नों के स्थान पर व्यापारिक फसलों का क्षेत्रफल धीर–धीरे बढ़ा है, और आज भारतीय कृषि व्यवस्था भरण–पोषण वादी न होकर व्यापारोन्मुख हो गयी है। आज हमारे देश के किसान का उद्देश्य अपने और देश के जीवन–यापन हेतू कृषि करना मात्र ही नहीं वरन् उसका उद्देश्य कृषि से लाभ कमाना है। आज कृषि व्यवस्था बाजारोन्मुख हो गयी है और धीरे– धीरे कृषि के उद्योगों का दर्जा दिया जाने लगा है। कृषि व्यावसायिकरण की संकल्वना का यही मूल मंत्र है। कृषि व्यावसायिक दृष्टि से सुदृढ़ करना मुख्य उद्देश्य रहता है। व्यावसायिकरण से जहां बाजार तंत्र मजबूत होता है, तो वहीं कृषि क्षेत्र में किये गये निवेश को लाभकारी दृष्टि से अकृषित कार्यों में लगाया जात है। कृषि व्यावसायिकरण को मांडल भी विकसित देशों की अपेक्षा भारत जैसे विकासशील देशों में भिन्न होता है, क्योंकि विकासशील देशों में यह श्रम की गहनता पर निर्भर करता है, वहीं विकसित देशों में यह पूंजीगत साधनों और तकनीकी पर निर्भर करता है।

कृषि व्यावसायिकरण का अंतिम उद्देश्य कृष्यौद्योगिक विकास, कृषि प्रधान क्षेत्रों में विकास की चरम अवस्था की ओर अग्रसर होना है। कृषि व्यावसायिकरण एक सूक्ष्म स्तरीय क्षेत्रीय संकल्पना है जो कि कृषि आर्थिक विकास पर विशेष जोर देती है। भारत जैसे विकासशील देशों में कृष्यौद्योगिक विकास की संकल्पना का यही उद्देश्य है। वर्तमान शाहजंहापुर जनपद क्षेत्र में कृषि व्यावसायिकरण का चरण–बद्ध अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसके साथ ही कृष्यौद्योगिक विकास का अध्ययन भी इसमें सम्मिलित किया जाता है। कृषि आधारित उद्योगों की वर्तमान तथा कृष्यौद्योगिक सम्भाव्यता का विश्लेषण भी इस संकल्पना का अभिन्न अंग है।

* *एसो0 प्रोफे0, भूगोल विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ*

** *शोधार्थी, भूगोल विभाग, मेरठ कॉलिज*

कृषि और कृषि विकास के क्षेत्र में विश्व के भूगोलवेत्ताओं के कार्य को प्राचीन समय से ही देखा जा सकता हैं, परन्तु इस संदर्भ में स्टाम्प के कार्य को सर्वप्रथम हम प्रामाणिक मानते हैं। जिन्होंने ब्रिटेन के भूमि उपयोग सर्वेक्षण का कार्य किया। इस सर्वेक्षण का उद्देश्य ब्रिटेन की एक–एक इंच भूमि उपयोग प्रस्तुत करना था। इसी संदर्भ में प्रो. जे. एल. बर्क ने चीन के भूमि उपयोग के संदर्भ में विस्तत विवरण प्रस्तुत किया। इन्होंने विद्यार्थियों के सहयोग से चीन के भूमि उपयोग का विवरण प्रस्तुत किया। लिस्वन की अन्तर्राष्ट्रीय भौगोलिक संघ का कांग्रेस में बल्किन वर्ग ने एक योजना प्रस्तुत की, जिसे उन्होंने विश्व के सभी देशों के लिए संपूर्ण भूमि उपयोग सूचर की संज्ञा दी। यह विचार यूनेस्को द्वारा सहर्ष समर्पित था। अमेरिका के उत्तरी मिशीगन प्रान्त की भूमि के सापेक्षिक गुणों के मूल्यांकन हेतु बनर्स द्वारा सर्वेक्षण प्रारम्भ किया। कोपेक द्वारा कृषि भूगोल में अनुसंधान की अवस्थाओं का विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया। उक्त भूगोलवेत्ताओं के अतिरिक्त अन्यानेक विदेशी भूगोलवेत्तओं ने कृषि एवं कृषिगत विशेषताओं के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किए है।

भारतवर्ष में इस दशा में संगठित प्रयास देर से प्रारम्भ हुए। सर्वप्रथम चटर्जी ने पश्चिम बंगाल के चौबीस परगना जिले के संक्षिप्त क्षेत्र को भौतिक वातावरण तथा सामाजिक आर्थिक कारकों के प्रभाव को कृषि पर अध्ययन हेतु चुना। सन् 1951 में शफी ने भारतवर्ष में भूमि–उपयोग सर्वेक्षण की एक योगजना बनाई। उन्होंने 1960 में पूर्वी उत्तर प्रदेश की भूमि उपयोग के निर्धारण में निर्देशन का कार्य किया। भारत में एक प्रदेश की कृषि क्षमता के मापन की समस्याओं का विवेचन शफी '1960' द्वारा किया गया। उन्होंने उत्तर प्रदेश के प्रत्येक जिले में 8 चयनित फसलों के प्रति एकड़ उपज के आधार पर कृषि क्षमता को निर्धारित करने का प्रयास किया और उत्तर प्रदेश में कृषि में क्षमता का चित्रण किया। 1962 में शफी ने एक शोध–पत्र में उत्तर प्रदेश में कृषि विकास के विवेचन का प्रयास किया और जनपद स्तर पर कृषि क्षमता स्तर एवं विभिन्न वर्षो में उत्पादन के बीच सहसम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया।

ब्रजभूषण सिंह '1988' ने भारतीय कृषि के बदलते प्रतिरूप का अध्ययन करते हुए मेरठ और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में हुए कर्षश परिवर्तनों, कृषि व्यवसायिकरण, कृषि व्यावसायिकरण का मॉडल तथा भारतीय संदर्भ में कृषि व्यवसायिकरण के उपरान्त नियोजन पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

अध्ययन क्षेत्र शाहजंहापुर जनपद बरेली मंडल का एक प्रमुख जनपद है। जिसका अक्षांशीय विस्तार 27 ड्रिगी 25'उत्तर से 28 ड्रिगी 27' उत्तर तथा देशान्रतीय विस्तार 79 ड्रिगी 26' पूर्व से 80 ड्रिगी 26' पूर्व दंशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 4461 वर्ग कि.मी. है जो कि बरेली मंडल 25.75 फीसदी क्षेत्र घेरे हुए है। क्षेत्र में 4 तहसीलें क्रमशः तिलहर, जलालाबाद, पुवायां तथ शाहजंहापुर हैं, 15 विकासखंड, 124 न्याय पंचायात, 922 ग्राम पंचायत, 2080 आबाद गांव, 251 गैर आबाद गांव तथा 11 नगरीय क्रेंद हैं। क्षेत्र के उत्तर–पश्चिम में पीलीभीत जनपद, पश्चिम में

बरेली जनपद, दक्षिण–पश्चिम में बदायूं जनपद, दक्षिण में फर्रूखाबाद जनपद, दक्षिण–पूर्व में हरदोई जनपद तथा उत्तर–पूर्व में खीरी जनपद स्थित है।

जनांकिकीय दृष्टि से शाहजंहापुर जनपद देश एवं प्रदेश में अधिक सघन बसे क्षेत्रों के अंर्तगत आता है। क्षेत्र की 2011 की कुल जनसंख्या 3002376 है जिसमें 1610182 पुरूष तथ 1392194 स्त्रियां है। क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व 673 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. तथ लिंगानुपात 865 स्त्री प्रति 1000 पुरूष है। क्षेत्र की कुल सारक्षता दर 61.61 फीसदी है। क्षेत्र की जनसंख्या में कृषिगत जनसंख्या का बाहुल्य है। कुल जनसंख्या का 2/3 से अधिक जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है।

शाहजंहापुर जनपद में भू–भाग गंगा के वृहद् मैदान का एक हिस्सा है जिसका धरातल एक समान समतल है लेकिन यहां बहने वाली नदियां एवं अन्य जल–स्त्रोतों द्वारा काट दिया गया है। जनपद की उत्तरी–पश्चिमी सीमा पर इसकी अधिकमत ऊंचाई समुद्र तल से 166.11 मीटर है जबकि शाहजंहापुर और हरदोई की सीमा के पास न्यूनतम ऊंचाई 146.30 मीटर पाई जाती है। धरातलीय दृष्टिकोण से जनपद को बांगर एवं खादर दो मुख्य भागों में बांटा गया है। बांगर क्षेत्र उच्च भूमि वाला क्षेत्र है और प्राचीन व स्थिर कॉप का बना हुआ है। खादर क्षेत्र को तराई का क्षेत्र अथवा निचली भूमि के नाम से जाना जाता है। जिसके निर्माण में अनरदन की लंबी प्रक्रिया कार्यरत है। क्षेत्र की धरातलीय रूवरूप के निर्धारण में यहां बहने वाली रामगंगा, गर्रा, गोमती, खन्नौत, कटना और बहगुल इत्यादि नदियों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रही है।

धरातीलय स्वरूप की विवेचना के आधार पर जनपद को तराई क्षेत्र या वन पेटी, गोमती क्षेत्र, बांगर क्षेत्र, खादर क्षेत्र तथा वनकटी क्षेत्र में बांटकर अध्ययन किया है। अध्ययन क्षेत्र की मिट्टी दोमट बलुई, बलुई दोमट, दोमट, चिकनी दोमट तथा बजरी दोमट प्रकार की है।

अध्ययन क्षेत्र की जलवायु मृदुमानसूनी है जिसमें गर्मियों में तीव्र गर्मी और जड़ों में अधिक ठण्ड पड़ती है। वर्षा की मात्रा सामान्य है। ग्रीष्म काल में 35 से 43 ड्रिगी और जाड़ों में 5 ड्रिगी से कम और वर्षा लगभग 100 सेमी. के आसपास होती है। जलवायु के विधिवत् अध्ययन हेतु को शीत ऋतु, वर्षा ऋतु तथा निर्वतनमान मानसून की ऋतु में विभाजित किया गया है। क्षेत्र में स्थानीय तथा क्षेत्रीय स्तर पर भौतिक कारकों में विभेद दर्शनीय है।

शाहजंहापुर जनपद उ.प्र. में मानव संसाधन विकास की दृष्टि से अपना अलग स्थान रखता है। क्षेत्र में जनसंख्या का तीव्र विकास यहां के कृषि संसाधनों के विकास पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ता है। अध्ययन क्षेत्र के यदि जनंकिकीय आंकड़ों का अध्ययन करें तो हम पाते है कि यह क्षेत्र सघन जनसंख्या का क्षेत्र रहा है। क्षेत्र की 1901 से 2011 तक की जनसंख्या वृद्धि के आंकड़ों से बात प्रमाणित होती है। 1901 से 2011

के मध्य 219.57 फीसदी की वृद्धि हुई है। जनसंख्या वृद्धि के आंकड़े क्षेत्र की जनसंख्या में अनियमित वृद्धि की ओर इशारा करते हैं। 1901 से 1921 के मध्य कुल जनसंख्या में –11.2 फीसदी की कमी हुई है। 1921 से 1931 के मध्य ग्रामीण, नगरीय एवं कुल जनसंख्या में वृद्धि की दर मन्द रही है। इस मध्य कुल जनसंख्या में 5.7 फीसदी, ग्रामीण जनसंख्या में 4.6 फीसदी तथा नगरीय जनसंख्या में 13.2 फीसदी की वृद्धि हुई है। 1977–1981 के मध्य नगरीय जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि 62.9 फीसदी रही है। जनपद में 1981 के बाद में कम है। क्षेत्र में यद्यपि जनसंख्या में वृद्धि तो हुई है पर ये वृद्धि 1981 की तुलना में कम है। क्षेत्र में 2001–2011 के मध्य कुल जनसंख्या वृद्धि दर 21.8 फीसदी है।

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व में भी अत्याधिक विभेद दर्शनीय है। क्षेत्र में 1971 से 2011 के जनसंख्या घन्तव के आंकड़े इसके स्पष्ट उदारण है। शाहजंहापुर जनपद में 1971 में जहां जनसंख्या का घन्तव 281 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि. मी. था वह 2011 में बढ़कर 673 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. हो गया है। क्षेत्र में जनसंख्या का असमान वितरण पाया जाता है इसका मुख्य कारण अन्य सामाजिक आर्थिक कारकों के साथ–साथ भौतिक कारकों का स्पष्ट प्रभाव है। अध्ययन क्षेत्र में विकासखण्डानुसार भी जनसंख्या के घन्तव में अत्याधिक विभेद दर्शनीय है। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक घन्तव 68 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. भावलेड़ा में तथा सबसे कम 193 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर खुटार विकासखण्ड में है। जनसंख्या घन्तव का विधिव्त अध्ययन करने के लिए क्षेत्र को उच्च, मध्यम और निम्न घन्तव क्षेत्रों में विभाजित किया गया है।

क्षेत्र के सर्वागीण विकास हेतु मानव संसाधन विकास के अन्य पहलुों पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। क्षेत्र में साक्षरता, व्यावसायिक संरचना का अध्ययन इस श्रेत्री के अंर्तगत आता है। जनपद में साक्षर व्यक्ति एवं साक्षरता प्रतिशत कम होने के साथ–साथ क्षेत्रीय एवं न्य स्तरीय विभिन्नता लिए हुए है। साक्षरता में स्त्री–पुरूष, आयुवर्ग, ग्रामीण एवं नगरीय, धार्मिक स्तर एवं क्षेत्रीय, स्तर पर नेकानेक भिन्नताएं विद्यमान है। अध्ययन क्षेत्र में 1971 में कुल साक्षरता 17.09 फीसदी, पुरूष साक्षरता 24. 09 फीसदी तथा स्त्री साक्षरता 8.31 फीसदी थी जो 2011 में बढ़कर 61.61 फीसदी कुल, 70.09 फीसदी तथा स्त्री साक्षरता 51.73 फीसदी हो गई है। जनपद में 1971 में 797 स्त्री प्रति 1000 पुरूष थी जो सरकारी प्रयासों से बढ़कर 2011 में 865 स्त्री प्रति 1000 पुरूष हो गई है। इस वृद्धि दर का मुख्य कारण जन्म से पहले बच्चे के लिंग पता करने पर रोक है।

क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना पर दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में 2011 में 331090 कृषक, 99634 कृषि श्रमिक, 17899 पारिवारिक उद्योगों में कार्यरत, 147632 अन्य कर्मकर, 596255 कुल मुख्य कर्मकर, 108307 सीमान्त कर्मकर तथा 704562 कुम कर्मकर है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि यहां के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय है। कृषि संबधी अध्ययनों में भूमि उपयोग का सूक्ष्मस्तरीय अध्ययन पना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अध्ययन क्षेत्र के वर्तमान भूमि उपयोग पर यादि हम दृष्टिपात करें तो हम पाते है कि जनपद का 79.99 फीसदी भाग शुद्ध बोया गया क्षेत्र 9.20 फीसदी कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लाई गई भूमि, 2.39 फीसदी वन, 0.86 फीसदी कृषि योग्य बंजर 4.81 फीसदी परती भूमि, 1.59 फीसदी कृषि के आयोग्य भूमि तथा शेष भूमि चारागाह, उद्यानों आदि के अर्तगत है। अध्ययन क्षेत्र की भूमि का विधिव्त अध्ययन कृषित, अकृषित और कृष्य भूमि में बांटकर अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के विकासखंडनुसार भूमि के उपयोग में अत्याधिक विभिन्नता विद्यमान है। क्षेत्र में सर्वाधिक कृषित क्षेत्र 88.25 फीसदी खुदागंज कटरा विकासखंड और सबसे कम कृषित भूमि 74.72 फीसदी खुटार में है। जनपद में सर्वाधिक अकृषित भूमि 22.30 फीसदी खुटार और सबसे कम 8.35 फीसदी सिंधौली विकासखंड में है। अध्ययन क्षेत्र में कृष्यभूमि के क्षेत्र में निरन्तर कमी प्रदर्शित की गई है। जनपद में इस श्रेणी में वर्तमान में कुल भूमि 5.22 फीसदी ही है।

भूमि उपयोग में शस्य प्रतिरूप का स्थान प्रमुख है। क्षेत्र में शस्य प्रतिरूप में विविधता दर्शनीय है। क्षेत्र में गन्ना, गेहूं, चावल आदि प्रमुख फसलें है। इसके अतिरिक्त मक्का, बाजरा, दलहन, तिलहन, आलू आदि फसलें भी क्षेत्र में बोयी जाती है। क्षेत्र में गेहूं और चावल प्रमुख फसलें हैं जो कि क्षेत्र के 73.12 फीसदी और 61.79 फीसदी क्षेत्र पर बोयी जाती है। इसके अतिरिक्त गन्ना, आलू, दलहन तथ तिलहन फसलें बोयी जाती है।

कृषि संबधी अध्ययन कृषि क्षमता अथवा कृषि उत्पादकता अध्ययन के बिना संपूर्ण नहीं है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि क्षमता मापन हेतु विभिन्न चरों का प्रयोग किया गया है। प्राप्त 7 चरों के आधार पर जनपद की विकासखंड स्तर पर वृद्धि निर्धारण का प्रयास किया गया है। जनपद में उपर्युक्त आधार पर सर्वाधिक कृषि क्षमता मदनापुर विकासखंड और सर्वाधिक कम कृषि क्षमता ददरौल विकासखंड में पायी जाती है। उपयुर्क्त आधार पर जनपद की विकासखंड स्तर पर उच्चतम, उच्च और सामान्य क्षमता प्रदेशों में विभाजित कर अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र के कृषि विकास के अध्ययन को जब तक पूर्ण नहीं माना जा सकता जबतक कि क्षेत्र के कृषि पर्यावरण परिवर्तन पर दृष्टिपात न किया जाए। अध्ययन क्षेत्र की कृषि में स्वातंत्रयोपरान्त आमूल–चूल परिवर्तन हुए है। परन्तु इस परिवर्तन की दर एवं मात्रा स्थान–स्थान पर भिन्न–भिन्न है। अध्ययन क्षेत्र के कृषि पर्यावरण में परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में यदि हम भूमि उपयोग के आंकड़ों का अध्ययन करें तो हम पाते है कि 1990–91 की तुलना में 2007–08 के भूमि उपयोग में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। शुद्ध बोया गया क्षेत्र में 3.18 फीसदी की वृद्धि हुई है। परती भूमि, ऊपर एवं कृषि के अयोग्य भूमि, चारागाहों उद्यागों के क्षेत्रफल में कमी हुई है।

जबकि अकृषित भमि का क्षेत्रफल निरन्तर बढ़ रहा है। जनपद में विकासखंड स्तर पर भी भूमि उपयोग के परिवर्तन में भिन्नता दर्शनीय है।

जनपद में कृषि पर्यावरण का प्रमुख कारण सिचांई के साधनों एवं सिंचित क्षेत्र में निरन्तर में प्रगति होना है। जनपद का अधिकांश भाग सिंचित है। जनपद में 94.60 फीसदी तक सिंचित है जो नहरों, नलकूपों 'राजकीय एवं व्यक्तिगत', पंपिंग सैे, कुओं द्वारा सींचा जात है। जनपद में कुल सिंचित क्षेत्र का 94.82 फीसदी नलकूपों द्वारा, 3.28 फीसदी नहरों द्वारा और शेष अन्य साधनों द्वारा सिंचित है। सिंचित क्षेत्र में नलकूपों द्वारा सिंचाई का प्रतिशत लगातार बढ़ रहा है। जनपद में कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतू उपर्युक्त के अतिरिक्त अन्य कृष्यार्थिक सुविधाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिनमें कृषि का मशीनीकरण, रासायनीकरण, विपण्न केंद्र, व्यापार एवं वाणिज्य, बैंक सुविधाएं, नवीनतन बीजों का प्रयोग यातायात एवं संचार के साधन, शीतगृहों की संख्या में वृद्धि, मंडी समितियां आदि में वृद्धि प्रमुख है। क्षेत्र में उपर्युक्त सभी सुविधाओं में लगातार एवं तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। अध्ययन क्षेत्र में मशीनीकरण में ट्रैक्टर, थ्रेसर, कल्टीवेटर का प्रयोग तथा विभिन्न रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग में निरन्तर वृद्धि हुई है। जनपद में 1988–89 में 104. 8 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर रासायनिक खादों का उपयोग हुआ जो 2007–08 में बढ़कर 206.4 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर हो गया है। उपर्युक्त कृष्यार्थिक सुविधाओं में वृद्धि के फलस्वरूप क्षेत्र में कृषि उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

कृषि के विकासात्मक स्वरूप के अध्ययन में कृषि व्यावसायीकरण का अध्ययन एवं मात्रा का निर्धारण महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इससे किसी क्षेत्र विशेष के कृषि विकास के विषय में महत्वपूर्ण सूचनाएं उपलब्ध होती है। कृषि से प्राप्त लाभ तथा क्षेत्र विशेष निवासियों के जीवन स्तर का मापन भी क्षेत्र के कृषि व्यावसायीकरण के स्तर के आधार पर किया जा सकता है। जनपद के कृषि संबधी आंकड़ों के अध्ययन से ये बात स्पष्ट है कि जनपद में कृषि व्यावसायीकरण द्वारा निर्धारित 12 चरों के आधार पर जनपद को 3 व्यावसायीकृत क्षेत्रों क्रमशः अत्याधिक, महत्व तथा सामान्य में वर्गीकृत किया गया है। जनपद का अधिकांश भाग मध्यम व्यावसायीकृत क्षेत्रों में आत है।

शाहजंहापुर जनपद के कृषि व्यावसायीकरण में कृषि आधरित उद्योगों एवं अन्य उद्योगों की महती भूमिका है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधारित कच्चे माल के साथ–साथ कृषि आधारित उद्योगों के विकास हेतु अन्य सभी सुविधाएं पूंजी, श्रम, परिवहन, बाजार आदि पर्याप्त मात्रा में सुलभ है। अध्ययन क्षेत्र में गन्ना, चारा, गेहूं, चावल, आलू की कृषि पर्याप्त मात्रा में होती है जो कि यहां के कृषि आधारित उद्योग चीनी, खांडसारी, गुड, रसायन एवं डेयरी उद्योग के लिए आधारभूत कच्चे माल है। इसके अतिरिक्त मूढा, चटाई निर्माण, आटा, दाल मिलें भी क्षेत्र में स्थानीय कच्चे माल पर आधारित उद्योग है। अध्ययन क्षेत्र में 2005–06 कुल कार्यरत कारखानों की संख्या 66 थी।

अध्ययन क्षेत्र में जहां एक ओर कृषि आधारित उद्योगों का तीव्र विकास हुआ है। वहीं क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों के विकास की और अधिक संभावनाएं विद्यमान है। जनपद में गन्ने के संबधित और अधिक चीनी मिलों की स्थापना क्षेत्र के गन्ना प्रधान क्षेत्रों में की जा सकती है। इसके साथ ही अल्कोहल, रसायन, फार्मास्युटिकल, गत्ता, कागज आदि के निर्माण की और अधिक इकाईयां लगाने की असीम संभानावएं है जहां दुग्ध एवं दुग्ध पदार्थों की अत्याधिक मांग है, क्षेत्र में कृषि उत्पादन के साथ ही डेयरी उद्योग के विकास की असीम संभानावएं छिपी है, जिसमें न केवल क्षेत्रीय किसानों की आय में वृद्धि होगी वरन् कृषि पर जनसंख्या की निर्भरता घटने के साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलेगा। मूढा, चटाई, खाद्य प्रसंस्करण, फलों के भंडारण, आलू भंडारण के विस्तारण की भी क्षेत्र में अनेकानेक संभावनाएं छिपी हुई है।

शाहजंहापुर जनपद में जहां पर कृषि उत्पादकता वृद्धि से व्यावसायीकरण को बढ़ावा मिला है तथा विभिन्न कार्यों में कृषि भूमि के उपयोग से कृषि क्षेत्र में लगातार कमी हो रही है। अवस्थापनात्मक तत्वों से भरूपर मात्रा के साथ–साथ जनसंख्या भी तीव्र गति से बढ़ी है। कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में जनसंख्या का बहुत कम ही भाग रोजगार पाता है। इसे दूर करने हेतु कृषि औद्योगिक विकास की प्रक्रिया से सुदृढ़ बनाना होगा। शाहजंहापुर जनपद के कृषि उत्पादकता स्तर एवं कृषि आधारित उद्योगों के सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन से ये बात स्पष्टतःसामने आती है कि क्षेत्र में कृषि औद्योगिक विकास हेतु सूक्ष्म स्तर पर को योजना प्रस्तुत की जाए जिससे क्षेत्र का समन्वित क्षेत्रीय आर्थिक विकास हो इस हेतु कृष्यौद्यौगिक सम्मिश्र की अवधारण को ध्यान में रखकर एक नियोजित मॉडल के आधार पर विकास करना होगा। जिससे क्षेत्र का संतुलित कृष्यौद्योगिक तंत्र 1. गन्ना–अल्कोहल–रसायन–पेपर तथा विधि कृष्यौद्योगिक तंत्र 2. चावल, सरसों, सब्जी, फल कृष्यौद्योगिक क्षेत्र 3. डेयरी, कृषि यंत्र तथा फ्लोर मिल कृष्यौद्योगिक क्षेत्र के लिए क्षेत्रीय स्तर पर अलग–अलग क्षेत्रों में विकास की संभावनाएं प्रस्तुत की है।

अन्त में कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र शाहजंहापुर जनपद एक सघन कृषि प्रधान क्षेत्र है, साथ ही कृषि आधारित उद्योगों के विकास की असीम संभावनाएं भी क्षेत्र में विद्यामान है। अध्ययन क्षेत्र भूमि व्यावसायीकरण एवं कृषि औद्योगिक विकास की स्थानीय समस्याओं हेतु निम्म सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि व्यावसायीकरण एवं कृषि औद्योगिक विकास पूर्ण रूप से विकसित नहीं है, साथ ही कृषि आधरित उद्योगों के वितरण में स्थानीय स्तर पर विषमतायें है जिन्हें दूर करने के प्रयास किए जाने चाहिए।

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि, घनत्व साक्षरता की कमी विशेष समस्याएं है। अतः क्षेत्र में जनसंख्या एवं कृषि संसाधनों में भावी संतुलन बनाए रखने के लिए भविष्य में जनसंख्या तथा कृषि संसाधनों की उपलब्धता का आंकलन अति आवश्यक है।

अध्ययन क्षेत्र में व्यापक प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधना के उपरान्त भी अनेक आर्थिक, सामाजिक और कृषिगत विषमताएं वास्वत में मानवकृत है, इसका मुख्य कारण एक ओर तो प्राकृतिक संसाधनों का सम्यक विकास न हो पाना तथा दूसरी ओर मानवीय संस्थाओं और अवस्थापनाओं द्वारा उनका विषम विकास हुआ है। क्षेत्र में परिश्रमी लोगों का शोषण होता है। जिससे उत्पादनशीलता में जनवृद्धि के समकक्ष भी वृद्धि दर तीव्र नहीं हो पाई है। वर्तमान समय में विभिन्न संस्थाओं एवं अवस्थापनाओं का इस रूप में सुधार एवं विकास हो रहा है। जिससे प्राकृतिक संसाधनों का मानव कल्याणार्थ अधिक से अधिक विकास होता रहे।

अन्ततः शोधार्थी आशान्वित है कि यदि क्षेत्र में कृषि व्यावसायीकरण एवं कृष्यौद्योगिक विकास हेतु सुझाए गए उपायों को यदि ठीक प्रकार से लागू किया जाए तो एक ओर कृषि का समग्र विकास होगा वहीं क्षेत्र में कृष्यौद्योगिक विकास से खुशहाली आएगी।

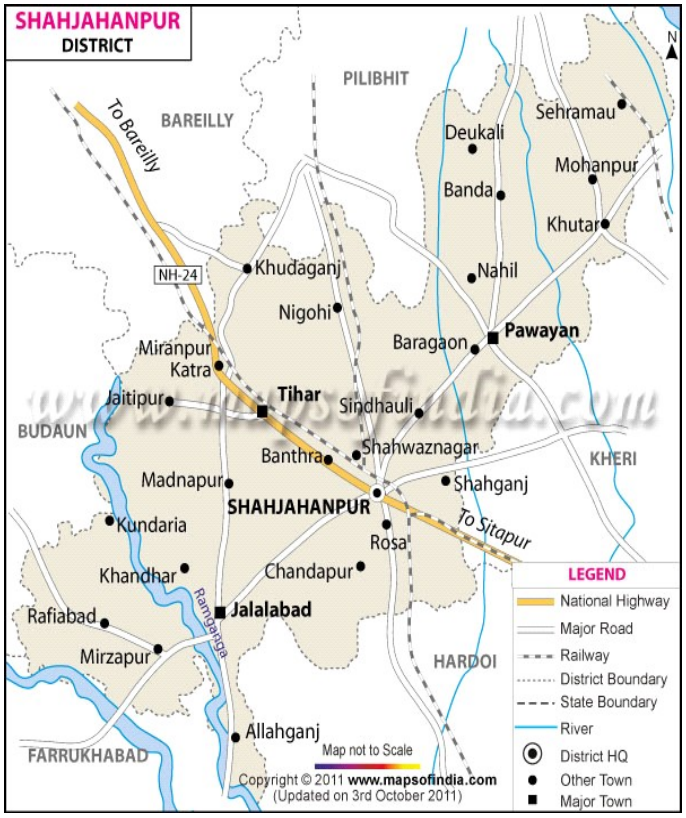

संदर्भ ग्रंथ

1. Stamp, L.D. (1962), "Land of Britain its use and misuse"London I.

2. Buck, J.L. (1973), "The Project Forward Befor the International Geographical Union at Lisbon".

3. Valken Burg, S.V. (1949), "The Project Forward Before the international Geographocal Union at Lisbon".

4. Burnes,C.P.(1928),"Land Resources inventory in Michigan" Economic,Geography, Vol.5,page no.1.

5. Coppack,J.T.(1971), An Agricultural Geography of great Britain", Landon, page 34.

6. Chaterjee, S.P. (1945), "Land use survey in India".

7. Safi, M.(1951), "A Plea for land use survey Geographer".

8. Safi, M.(1960), "Land Utilisation in Estrain U.P.A.M.U. Aligrah."

9. Singh, B.B.(1988),Agro-Induatrial integration A model for rural Development.

10. सांख्यिकीय पत्रिका जनपद शाहजहांपुर 2009

11. Shahajahanpur Cencus 2011 Hightlights,Indian Population.